२७३ दिनोंमें भोपालसे ३५ करोड़की साइबर ठगी

युवाओं को निशाना बना रहे साइबर अपराधी, पुलिस की कार्रवाई पर उठे सवाल, शिकायतें ४१७९ और एफआईआर सिर्फ ९४३

भोपाल, (एजेंसी)। राजधानी में साइबर अपराध का दायरा लगातार बढ़ रहा है। ऑनलाइन ठगी के नए-नए तरीकों से जालसाज लोगों की जीवनभर की कमाई पर हाथ साफ कर रहे हैं। हालात यह हैं कि वर्ष २०२६ के शुरुआती नौ महीनों में ही भोपाल के लोग साइबर ठगी में ३५.३१ करोड़ रुपये गंवा चुके हैं। इसके बावजूद शिकायतों और एफआईआर के आंकड़ों में बड़ा अंतर सामने आया है। २७३ दिनों में पुलिस को ४१७९ शिकायतें मिलीं, लेकिन इनमें से केवल ९४३ मामलों में एफआईआर दर्ज की गई।

आंकड़े बताते हैं कि साइबर अपराधियों के तरीके बदल रहे हैं, लेकिन शिकायतों पर कार्रवाई की रफ्तार को लेकर सवाल बने हुए हैं। पीडितों को आर्थिक नुकसान के साथ-साथ पुलिसिया प्रक्रिया से भी जूझना पड़ रहा है।

शिकायतें हजारों में, एफआईआर सैकड़ों में

आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, १ जनवरी से ३० सितंबर २०२६ के बीच साइबर ठगी की ४१७९ शिकायतें दर्ज हुईं। इनमें ९४३ मामलों में एफआईआर दर्ज की गई। यानी कुल शिकायतों में करीब २२.६ प्रतिशत मामलों में ही एफआईआर हुई। बाकी शिकायतों पर एफआईआर दर्ज नहीं होने की स्थिति जांच और कार्रवाईकी प्रक्रियाको लेकर सवाल खड़े करती है।

पिछले वर्षों में भी यही तस्वीर

साइबर अपराध की शिकायतों और एफआईआर के बीच अंतर पिछले वर्षों में भी सामने आता रहा है। २०१९ से २०२१ तक ८६१४ शिकायतों में ४०० एफआईआर हुई। वहीं २०२३ में ६०८७ शिकायतें, ५० एफआईआर, २०२५ में ४७२४ शिकायतें, ६० एफआईआर और जनवरी से सितंबर २०२६ तक ४१७९ शिकायतों में ९४३ एफआईआर हुई हैं। इन आंकड़ों में अलग-अलग वर्षों के दौरान शिकायतों के मुकाबले एफआईआर की संख्या में बड़ा अंतर दिखाई देता है। हालांकि, शिकायत और एफआईआर की श्रेणियां अलग हो सकती हैं, इसलिए दोनों को सीधे दर्ज अपराधों की संख्या नहीं माना जा सकता।

युवाओं को बना रहे निशाना

साइबर ठगी के मामलों में युवा भी बड़ी संख्या में प्रभावित हो रहे हैं। ऑनलाइन ट्रेडिंग में मोटा मुनाफा कमाने का लालच, सोशल मीडिया पर फर्जी प्रोफाइल, निवेश के नाम पर ठगी और डिजिटल ट्रांजैक्शन से जुड़े झांसे अपराधियों के प्रमुख हथियार बन रहे हैं। जालसाज लोगों को भरोसे में लेकर बैंक खाते, ओटीपी और अन्य गोपनीय जानकारियां हासिल करते हैं। कई मामलों में फर्जी निवेश प्लेटफॉर्म के जरिए लोगों को शुरुआत में मुनाफा दिखाया जाता है और बाद में बड़ी रकम जमा कराने के बाद संपर्क तोड़ दिया जाता है।

रकम गंवाने के बाद पीडितों के सामने दोहरी चुनौती

साइबर ठगी का शिकार होने के बाद पीडितों के सामने सबसे बड़ी चुनौती रकम वापस पाने और आरोपियों तक पहुंचने की होती है। शुरुआती समय में शिकायत दर्ज कराने और बैंक खातों में रकम रोकने की कोशिश महत्वपूर्ण होती है। इसके बावजूद शिकायतों की बड़ी संख्या और एफआईआर के कम आंकड़े पुलिस की जांच व्यवस्था, शिकायतों के निस्तारण और पीडितों को मिलने वाली सहायता पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। सवाल यह है कि जब नौ महीने में ३५.३१ करोड़ रुपये की ठगी हो चुकी है, तो साइबर अपराधियों पर प्रभावी कार्रवाई और पीडितों को राहत दिलाने के लिए पुलिस की व्यवस्था कितनी सक्षम है?

प्रापर्टी डीलर पर पार्टनर ने किया तलवार से हमला

जबलपुर, (एजेंसी)। यादव कॉलोनी स्थित प्रॉपर्टी को लेकर हुए विवाद में एक प्रॉपर्टी डीलर पर तलवार और बेसबॉल के डंडे से हमला किए जाने का मामला सामने आया है। ओमती पुलिस ने दो आरोपियों के विरुद्ध हत्या के प्रयास सहित संबंधित धाराओं में प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।पुलिस के अनुसार, नर्मदा परिसर, न्यू आदर्श कॉलोनी निवासी ४७ वर्षीय उमेश तिवारी ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि यादव कॉलोनी स्थित प्रॉपर्टी में कल्लन गुप्ता उर्फ राममोहन गुप्ता और टीपू उर्फ रामप्रकाश गुप्ता उसके पार्टनर हैं। प्रॉपर्टी के संबंध में बातचीत करने के लिए उसने टीपू गुप्ता को फोन किया था। टीपू ने उसे कृष्णा कॉम्प्लेक्स स्थित कार्यालय बुलाया।

उमेश अपने साथी विक्की चौरसिया और बड़े भाई दिनेश तिवारी को भी वहां आने के लिए कहकर कार्यालय पहुंचा। आरोप है कि बातचीत के दौरान कल्लन गुप्ता ने तलवार निकालकर उसके सिर पर हमला कर दिया, जिससे वह वाहन सहित गिर पड़ा। इसके बाद दोबारा तलवार से वार किया गया। वहीं, टीपू गुप्ता ने बेसबॉल के डंडे से हमला कर उसके सिर और शरीर में चोटें पहुंचाईं।

कबाड़ के रास्ते नागपुर पहुंचे ओएफके के कारतूस..?

आयुध स्क्रैब निस्तारण की व्यवस्था पर बड़ा सवाल

जबलपुर, (एजेंसी)। नागपुर के पास जाम नदी पर बन रहे पुल के नजदीक ओएफके (ऑर्डनेंस फैक्ट्री खमरिया) के निशान वाले लावारिस कारतूस मिलने के मामले ने अब कबाड़ के कारोबार और पुराने गोला-बारूद के निस्तारण की व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। करीब ४० साल पुराने बताए जा रहे इन कारतूसों के नागपुर तक पहुंचने की कहानी को लेकर खमरिया निर्माणी में अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच चर्चाओं का दौर जारी है।

निर्माणी से जुड़े जानकारों के मुताबिक, करीब चार दशक पहले ही इस तरह के कारतूसों का निर्माण बंद हो चुका है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतने पुराने कारतूस अब तक कहां और किसके पास थे और वे नागपुर के पास कैसे पहुंच गए? नागपुर पुलिस के अनुसार बरामद कारतूसों पर ओएफके का निशान है। इसी आधार पर निर्माणी में भी पुराने दस्तावेजों और उपलब्ध रिकॉर्ड के जरिए उनके संबंध में जानकारी जुटाने की कोशिश की जा रही है।

बताया जा रहा है कि जिस दौर में इन कारतूसों का निर्माण हुआ था, उस समय कंप्यूटर आधारित रिकॉर्ड व्यवस्था नहीं थी। ऐसे में चार दशक पुराने रजिस्टरों और दस्तावेजों से किसी खास खेप की जानकारी निकालना आसान नहीं होगा। जानकारों का कहना है कि गोला-बारूद की निर्धारित उपयोग अवधि होती है और अवधि पूरी होने के बाद उसके सुरक्षित निस्तारण की प्रक्रिया अपनाई जाती है। निर्माणी विशेषज्ञों की एक आशंका यह भी है कि बरामद कारतूस पुराने गोला-बारूद के विनष्टीकरण की प्रक्रिया के दौरान इधर-उधर हुए हो सकते हैं।

वहीं आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, यह मामला सीधे निर्माणी से जुड़ा होने के बजाय पुराने कारतूसों के विनष्टीकरण के दौरान उनके बाहर पहुंचने अथवा किसी अन्य माध्यम से कबाड़ियों या दूसरे लोगों के हाथ लगने से भी जुड़ा हो सकता है। कबाड़ के कारोबार में पुराने सामान की छंटाई और आवाजाही के दौरान कई बार सामान अलग-अलग जगह पहुंच जाता है। हालांकि, नागपुर में मिले कारतूस कबाड़ के रास्ते पहुंचे हैं या उनका कोई दूसरा स्रोत है, यह जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

जांच अभी भी जारी

गौरतलब है कि पिछले दिनों जबलपुर में भी शमीम कबाड़ी के यहां खमरिया निर्माणी से जुड़े विस्फोट की घटना सामने आई थी, जिसकी जांच अभी जारी है। ऐसे में नागपुर में ओएफके के निशान वाले पुराने कारतूसों की बरामदगी ने एक बार फिर पुराने सैन्य सामान और कबाड़ के कारोबार के बीच संभावित कड़ियों को लेकर चर्चा तेज कर दी है। अब निगाहें पुलिस की जांच और निर्माणी के पुराने रिकॉर्ड से मिलने वाली जानकारी पर टिकी हैं।

मारपीट और चाकूबाजी के ३ आरोपितों को २-२ साल का कठोर कारावास

जबलपुर, (एजेंसी)। मारपीट चाकूबाजी के तीन आरोपियों को न्यायालय ने दो-दो वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी सुश्री सिमरन गुप्ता की अदालत ने आरोपी दीपू उर्फ दीपचंद, पप्पू उर्फ आकाश गुप्ता और राघव भूषण उर्फ मोंटी सोलंकी को विभिन्न धाराओं में दोषी पाते हुए प्रत्येक पर ५००-५०० रुपये का अर्थदंड भी लगाया है। अभियोजन के अनुसार घटना २३ अगस्त २०१५ की रात करीब १० बजे की है। फरियादी मोहनलाल श्रीवास्तव अपनी दुकान बंद कर बेटी के साथ साइकिल से घर लौट रहे थे। खेरमाई मंदिर के पास आरोपियों ने उनका रास्ता रोक लिया। आरोपियों ने उनके साथ गाली-गलौज करते हुए शराब पीने के लिए एक हजार रुपये मांगे। रुपये देने से इनकार करने पर आरोपियों ने मुखबिरी करने का आरोप लगाते हुए उन्हें जान से खत्म करने की बात कही और हमला कर दिया।

एलएचबी कोचों की बिजली व्यवस्था पर ३.१२ करोड़ खर्च

भोपाल वर्कशाप में मरम्मत के दौरान लगेंगे नए बैटरी चार्जर और ब्लोअर, चार्जिंग सिस्टम की निगरानी भी होगी आसान

भोपाल, (एजेंसी)। ट्रेनों में बिजली व्यवस्था को दुरुस्त रखने और तकनीकी खराबियों की निगरानी आसान बनाने के लिए रेलवे भोपाल के कोच मरम्मत कारखाने में ३.१२ करोड़ रुपये खर्च करेगा। इसके तहत एलएचबी कोचों के एसी और नॉन-एसी डिब्बों में बैटरी चार्जर से लेकर एग्जास्ट ब्लोअर और इंडिकेशन बोर्ड तक लगाए जाएंगे। योजना को अगले २४ महीने में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

इस काम का फोकस कोचों की विद्युत व्यवस्था को बेहतर बनाने के साथ उसके रखरखाव को आसान करना है। नए इंडिकेशन बोर्ड से कर्मचारियों को बैटरी चार्जर की स्थिति का पता लगाने में सहूलियत होगी। वहीं, नए चार्जिंग सॉकेट, फ्यूज बॉक्स और इमरजेंसी फीड टर्मिनल बॉक्स से बैटरी कनेक्शन और आपातकालीन बिजली व्यवस्था से जुड़े सिस्टम को दुरुस्त किया जाएगा।

नान-एसी कोचों पर सबसे ज्यादा जोर

योजना में नॉन-एसी कोचों के बैटरी चार्जिंग और सुरक्षा से जुड़े उपकरणों पर विशेष ध्यान दिया गया है। बैटरी चार्जिंग सॉकेट, इमरजेंसी फीड टर्मिनल बॉक्स और फ्यूज बॉक्स लगाने पर करीब ९९.२७ लाख रुपये खर्च होंगे। इसके अलावा हवा बाहर निकालने के लिए डबल इनलेट सेंट्रीफ्यूगल एग्जास्ट ब्लोअर लगाने के लिए ८१.४९ लाख रुपये निर्धारित किए गए हैं। नॉन-एसी कोचों के एलवी पैनल में बैटरी चार्जर की स्थिति बताने वाले इंडिकेशन बोर्ड भी लगाए जाएंगे। इस काम पर करीब ५७.३७ लाख रुपये खर्च होंगे। इससे संबंधित कर्मचारियों को चार्जर की स्थिति समझने और रखरखाव के दौरान जांच करने में मदद मिलेगी।

एसी कोचों में भी बदलेगा चार्जिंग सिस्टम

एसी कोचों के स्विच बोर्ड कैबिनेट में ४.५ किलोवाट क्षमता वाले बैटरी चार्जर के इंडिकेशन बोर्ड लगाए जाएंगे। इसके लिए २०.६६ लाख रुपये का प्रावधान है। वहीं, एसी कोचों के निचले हिस्से में ४.५ किलोवाट क्षमता वाले नए बैटरी चार्जर लगाने पर ४१.६१ लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। नॉन-एसी कोचों में भी इसी क्षमता के नए बैटरी चार्जर लगाए जाएंगे, जिसके लिए ११.९२ लाख रुपये निर्धारित किए गए हैं। ये चार्जर कोचों की बैटरी चार्जिंग और आपातकालीन बिजली व्यवस्था से जुड़े होंगे।

नियमित मरम्मत के दौरान होगा काम

रेलवे की योजना के मुताबिक, नए उपकरण लगाने का काम कोचों की नियमित मरम्मत के दौरान किया जाएगा। उपकरण स्थापित करने के बाद उनकी जांच भी होगी, ताकि उनकी कार्यक्षमता सुनिश्चित की जा सके। निर्धारित समयसीमा के भीतर काम पूरा होने से कोचों की विद्युत प्रणाली के रखरखाव और तकनीकी निगरानी में सुधार की उम्मीद है। हालांकि, यात्रियों को सीधे तौर पर कितनी सुविधा मिलेगी, यह उपकरणों की स्थापना और उनके प्रभावी संचालन पर निर्भर करेगा।

आनलाइन बिक रहीं कार्बाइड-पोटाश गन

५०० रुपये से शुरू कीमत; आंखों की रोशनी पर खतरा

भोपाल, (एजेंसी)। दीपावली पर बच्चों की सुरक्षा के लिए कार्बाइड और पोटाश गन पर प्रतिबंध लगाया गया है, लेकिन इनकी ऑनलाइन बिक्री पर प्रभावी रोक लगती नजर नहीं आ रही। विभिन्न ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया पर ये गन अलग-अलग नामों से बेची जा रही हैं। इनकी कीमत ५०० से ९०० रुपये के बीच बताई जा रही है, जबकि कुछ प्लेटफॉर्म पर इससे कम कीमत के विकल्प भी उपलब्ध हैं। चिंता की बात यह है कि प्रतिबंध के बावजूद इनकी ऑनलाइन उपलब्धता प्रशासन की निगरानी और कार्रवाई पर सवाल खड़े कर रही है।

प्रदेश में पिछले साल कार्बाइड गन से जुड़े हादसों में कई दर्जन लोगों की आंखों की रोशनी जाने की बात सामने आई थी। इसके बाद प्रशासन ने इस बार इनके निर्माण, भंडारण, बिक्री और इस्तेमाल पर रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। पुलिस और प्रशासन की टीमें अलग-अलग स्थानों पर कार्रवाई भी कर रही हैं। इसके बावजूद इंटरनेट पर इनकी बिक्री के दावे सामने आ रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने २१ अक्टूबर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए प्रदेश के कलेक्टरों, कमिश्नरों और पुलिस अधिकारियों को कार्बाइड गन तथा कार्बाइड लैंप के इस्तेमाल पर प्रभावी रोक लगाने के निर्देश दिए थे। इसके बाद भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा १६३ के तहत आदेश जारी कर कार्बाइड और पोटाश गन के निर्माण, भंडारण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाया। स्थानीय स्तर पर पुलिस और प्रशासन की टीमों ने कार्रवाई करते हुए निर्माण और बिक्री से जुड़े ठिकानों पर दबिश दी। इसके बावजूद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर इनकी उपलब्धता रोकना बड़ी चुनौती बना हुआ है। अब सवाल यह है कि जब स्थानीय स्तर पर प्रतिबंध लागू है, तो दूसरे नामों और श्रेणियों के तहत इनकी बिक्री पर निगरानी कैसे रखी जा रही है।

अलग-अलग नामों से आनलाइन बिक्री

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की पड़ताल में कार्बाइड और पोटाश गन की बिक्री के कई उदाहरण सामने आए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, कुछ उत्पादों को सामान्य गन के बजाय सर्जिकल ग्रेड, क्रैकर गन या मंकी रेपेलर जैसे नामों से सूचीबद्ध किया गया है। सोशल मीडिया मार्केटप्लेस पर भी इनकी बिक्री के विज्ञापन मिलने की बात कही गई है। फ्लिपकार्ट पर एक पोटाश गन की कीमत करीब ५९४ रुपये और दूसरे उत्पाद की कीमत ९१४ रुपये बताई गई। मीशो पर दीपावली गन नाम से करीब ४२९ रुपये का उत्पाद सूचीबद्ध होने का उल्लेख है। अमेजन पर मंकी रेपेलर गन के नाम से करीब १५०० रुपये का उत्पाद दिखने की बात कही गई है। फेसबुक मार्केटप्लेस पर भी अलग-अलग कीमतों पर बिक्री के विज्ञापन मिलने का दावा है। हालांकि, ऑनलाइन किसी उत्पाद का सूचीबद्ध होना अपने आप में यह साबित नहीं करता कि संबंधित विक्रेता प्रतिबंधित क्षेत्र में उसकी अवैध बिक्री कर रहा है। इसके लिए उत्पाद की वास्तविक प्रकृति, विक्रेता और लागू प्रतिबंधों के आधार पर जांच जरूरी है।

पोटाश गन में घर्षण से भी विस्फोट का खतरा

पोटाश गन को लेकर चिंता इसलिए भी गंभीर है, क्योंकि इसमें इस्तेमाल होने वाले रासायनिक मिश्रण से अचानक विस्फोट हो सकता है। पोटाश और गंधक का मिश्रण घर्षण तथा अन्य परिस्थितियों में बेहद संवेदनशील हो सकता है। ऐसे में थोड़ी-सी लापरवाही भी गंभीर हादसे का कारण बन सकती है। कार्बाइड गन में कैल्शियम कार्बाइड और पानी की प्रतिक्रिया से एसिटिलीन गैस बनती है। इस गैस के प्रज्वलन से तेज धमाका होता है। दबाव, उपकरण की गुणवत्ता और संचालन के तरीके के कारण गन फट सकती है या उसके हिस्से निकलकर शरीर पर चोट पहुंचा सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे हादसों में आंख का कॉर्निया, रेटिना या नेत्रगोलक क्षतिग्रस्त हो सकता है। चेहरे और हाथों पर गंभीर चोट तथा जलने का खतरा भी रहता है। बच्चों के हाथ में ऐसी गन होना विशेष रूप से जोखिम भरा है। इसे खिलौना समझकर चेहरे के पास चलाने से स्थायी दिव्यांगता तक हो सकती है।

राजहंस ट्रेवल्स की बस से एसआई का १४ लाख रुपयोंसे भरा बैग चोरी

गोसलपुर के पास वारदात से मचा हड़कंप

जबलपुर, (एजेंसी)। गोसलपुर के पास सोनम ढाबे पर ठहराव के दौरान राजहंस ट्रेवल्स की बस से रीवा यातायात में पदस्थ एक सब इंस्पेक्टर का १४ लाख रुपये से भरा बैग रहस्यमय तरीके से गायब हो गया। एसआई ने बस की सीट पर बैग रखा था और कुछ देर के लिए नीचे उतरे थे। लौटने पर बैग गायब मिला। काफी तलाश और पूछताछ के बाद भी उसका कोई सुराग नहीं मिलने पर गोसलपुर पुलिस ने चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गोसलपुर थाना प्रभारी भावना तिवारी के अनुसार रीवा यातायात में पदस्थ सब इंस्पेक्टर शिवनरेश तिवारी गुरुवार रात राजहंस ट्रेवल्स की बस से रीवा से नागपुर जा रहे थे। रात करीब १२ बजे बस गोसलपुर हाईवे स्थित सोनम ढाबे पर कुछ देर के लिए रुकी। इस दौरान बस में सवार यात्री टॉयलेट जाने के लिए नीचे उतरे। एसआई तिवारी भी अपना बैग सीट पर छोड़कर नीचे चले गए। कुछ देर बाद जब वह लौटे तो सीट से बैग गायब था।

उन्होंने बस में मौजूद यात्रियों से पूछताछ की और पूरे बस में बैग की तलाश की, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। यात्रियों ने भी बैग के संबंध में कोई जानकारी होने से इनकार कर दिया। इसके बाद एसआई ने गोसलपुर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ढाबे पर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगालने के साथ ही बस चालक और परिचालक से पूछताछ कर रही है। बैग में रखी १४ लाख रुपये की रकम के संबंध में भी जांच की जा रही है।

मोबाइल हैक कर बैंक खातों से २.३३ लाख रुपये से अधिक की ठगी

बेलबाग में तीन ट्रांजेक्शन से १.९५ लाख रुपये निकाले, गोहलपुर में खाते से ३८ हजार रुपये पार

जबलपुर, (एजेंसी)। शहर में मोबाइल हैक कर बैंक खातों से रकम निकालने के दो मामले सामने आए हैं। बेलबाग और गोहलपुर थानों में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी के प्रकरण दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। दोनों मामलों में पीड़ितों को कुल २ लाख ३३ हजार ६० रुपये की चपत लगी है। बेलबाग निवासी ५० वर्षीय किशन विश्वकर्मा की पोस्ट ऑफिस के पास जनरल स्टोर की दुकान है, जहां वह सिलाई का काम भी करता है। उसका पंजाब नेशनल बैंक की जवाहरगंज शाखा में खाता है। किशन ने पुलिस को बताया कि २० अक्टूबर को अज्ञात व्यक्ति ने उसका मोबाइल हैक कर खाते से ५२ हजार और ४५ हजार ५६० रुपये निकाल लिए। अगले दिन २१ अक्टूबर को दोबारा मोबाइल हैक कर ९७ हजार ५०० रुपये निकाल लिए गए। खाते से कुल १ लाख ९५ हजार ६० रुपये ट्रांसफर किए जाने की शिकायत पर बेलबाग पुलिस ने धारा ३१८(४) और ३१९(२) बीएनएस के तहत कार्रवाई की है। दूसरे मामले में अमखेरा निवासी ३६ वर्षीय बालेंद्र पटेल ने गोहलपुर थाने में शिकायत दर्ज कराई कि वह एम्ब्रॉयडरी का कारखाना चलाता है। उसका खाता आईसीआईसीआई बैंक की विजय नगर शाखा में है और उससे मोबाइल लिंक होने के कारण वह गूगल पे का इस्तेमाल करता है। शिकायत के अनुसार, १८ अक्टूबर को अज्ञात व्यक्ति ने मोबाइल हैक कर यूपीआई ट्रांजेक्शन के जरिए खाते से ३८ हजार रुपये निकाल लिए।

एमबीबीएस की आवंटित सीट निरस्त करने पर अनावेदकों से जवाब-तलब

हाईकोर्ट ने छात्र के लिए एक सीट खाली रखने के दिए निर्देश

जबलपुर, (एजेंसी)। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश विवेक रूसिया व न्यायाधीश प्रदीप मित्तल की संयुक्तपीठ ने नीट के माध्यम से एमबीबीएस पाठयक्रम में सीट आवंटित होने और प्रवेश की निर्धारित औपचारिकताएं पूरी करने के बाद भी दाखिला निरस्त किए जाने के खिलाफ दायर बड़वानी निवासी छात्र दिव्यांशु सेपटा की याचिका पर सुनवाई करते हुए मामले में सभी अनावेदकों को नोटिस जारी कर जवाब पेश करने कें निदेश दिए हैं । इसकेे साथ ही न्यायालय ने याचिकाकर्ता के लिए एक सीट रिक्त रखने के निर्देश दिए हैं।

मामले में सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से दलील दी गई कि उसने एमबीबीएस में प्रवेश के लिए नीट परीक्षा दी थी। रैंक के आधार पर काउंसलिंग के माध्यम से उसे आरकेडीएफ कॉलेज में सीट आवंटित हुई थी। इसके बाद उसने मॉप-अप राउंड में सीट अपग्रेड करने के लिए आवेदन किया। माप-अप काउंसलिंग के दौरान वह सभी औपचारिकताएं पूरी करने के लिए स्वयं उपस्थित हुआ और नोडल अधिकारी के समक्ष दस्तावेजों का सत्यापन भी कराया। याचिका के अनुसार, सीट आवंटित होने के बाद उसने निर्धारित प्रक्रिया पूरी की, सीट लीविंग बान्ड भरा और फीस भी जमा कर दी। इसके बावजूद बाद में ई-मेल के माध्यम से उसे सूचित किया गया कि आवंटित सीट निरस्त कर दी गई है। इसकी वजह कालेज द्वारा प्रवेश की रसीद पोर्टल पर जनरेट नहीं किया जाना बताई गई। याचिकाकर्ता की ओर से दलील दी गई कि संचालक, चिकित्सा शिक्षा विभाग ने भी इस संबंध में कॉलेज को पत्र लिखा था। उक्त पत्र में स्पष्ट किया गया था कि छात्र की प्रवेश रसीद पोर्टल पर जनरेट करने की जिम्मेदारी कालेज प्रबंधन की है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि पोर्टल पर रसीद जनरेट करना महज प्रशासनिक औपचारिकता है। उसकी भौतिक उपस्थिति, फीस जमा करने और नोडल अधिकारी द्वारा दस्तावेजों के सत्यापन के माध्यम से प्रवेश की प्रक्रिया पहले ही पूरी हो चुकी थी। ऐसे में कॉलेज की ओर से पोर्टल पर रसीद जनरेट नहीं किए जाने का खामियाजा याचिकाकर्ता छात्र को भुगतना पड़ रहा है। संयुक्तपीठ को अवगत कराया गया कि प्रदेश में एमबीबीएस पाठयक्रम की चार सीटें रिक्त हैं और इनके लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि ३० अक्टूबर निर्धारित है। न्यायालय ने मामले की परिस्थितियों पर विचार करने के बाद याचिकाकर्ता के लिए एक सीट रिक्त रखने के निर्देश दिए, साथ ही अनावेदकों से जवाब तलब कर लिया।

होटल चलाने के लिए रुपये मांगें, चाकू अड़ाकर धमकाया, तोड़फोड़ भी की

जबलपुर, (ईएमएस)। गढ़ा क्षेत्र में दो होटलों में तोड़फोड़ करने और चाकू अड़ाकर रुपये मांगने का मामला सामने आया है। होटल प्रबंधक की शिकायत पर पुलिस ने तीन युवकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, स्नेह नगर मदनमहल निवासी ३७ वर्षीय कमलेश बघेल रतन नगर, गढ़ा स्थित प्रो मैक्स होटल और डिवाइन प्रो होटल का प्रबंधक है। उसने शिकायत में बताया कि २७ अक्टूबर की रात कर्मचारियों ने फोन कर सूचना दी कि स्कूटी से आए तीन युवक प्रो मैक्स होटल के गेट और खिड़की के कांच में तोड़फोड़ कर रहे हैं। सूचना पर वह मौके पर पहुंचा, लेकिन तब तक तीनों युवक भाग चुके थे।

प्रतिबंधित कार्बाइड गन के अवैध कारोबार पर पुलिस की दबिश, तीन आरोपित गिरफ्तार

३९ किलो ५०० ग्राम कार्बाइड, १४ कार्बाइड गन, सात सर्किट और सात प्लास्टिक पाइप जब्त

जबलपुर, (एजेंसी)। प्रतिबंधित कार्बाइड गन के अवैध निर्माण और विक्रय के खिलाफ क्राइम ब्रांच, थाना कुंडम एवं थाना मदनमहल पुलिस की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को पकड़ा है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से कुल ३९ किलो ५०० ग्राम कैल्शियम कार्बाइड, १४ कार्बाइड गन, सात सर्किट और सात प्लास्टिक पाइप जब्त किए हैं। आरोपियों के खिलाफ जिला दंडाधिकारी के प्रतिबंधात्मक आदेश का उल्लंघन करने पर वैधानिक कार्रवाई की गई पुलिस के अनुसार २९ अक्टूबर की शाम क्राइम ब्रांच को सूचना मिली कि बाजार मोहल्ला बघराजी निवासी ५८ वर्षीय दशरथ बड़गइयां ने अपने मकान में बिक्री के लिए कार्बाइड गन रखी हैं। सूचना पर क्राइम ब्रांच और कुंडम पुलिस की संयुक्त टीम ने दबिश दी। तलाशी के दौरान मकान में सीढ़ियों के पास प्लास्टिक पाइप से तैयार १० कार्बाइड गन, गन बनाने में इस्तेमाल होने वाले सात प्लास्टिक पाइप, सात सर्किट और बोरी में रखा ११ किलो ५०० ग्राम कार्बाइड बरामद हुआ। पुलिस ने सामग्री जब्त कर आरोपी के खिलाफ धारा २२३ बीएनएस एवं विस्फोटक अधिनियम की धारा ९(बी) के तहत कार्रवाई की।इसी दौरान पुलिस टीम ने बघराजी स्थित एक दुकान पर दबिश देकर दुकान संचालक २९ वर्षीय चित्रांश साहू निवासी ग्राम बघराजी के कब्जे से प्लास्टिक पाइप से तैयार चार कार्बाइड गन बरामद कीं। पुलिस ने गन जब्त कर आरोपी के खिलाफ धारा २२३ बीएनएस के तहत कार्रवाई की।

मदनमहल पुलिस ने भी जब्त किया २८ किलो कार्बाइड

दूसरी कार्रवाई में मदनमहल पुलिस ने २९ अक्टूबर को पेट्रोलिंग के दौरान बंसल ब्लड बैंक के पास सुखेजा टावर स्थित लाठिया ट्रेडर्स पर जांच की। दुकान संचालक ४९ वर्षीय विजय साहू, निवासी गोल्डन टाउन, माढ़ोताल की दुकान में रखे ड्रम से २८ किलो कैल्शियम कार्बाइड बरामद हुआ। इसकी कीमत करीब २८०० रुपये बताई गई है। पुलिस ने कार्बाइड जब्त कर जिला दंडाधिकारी के १७ अक्टूबर २०२६ के आदेश का उल्लंघन करने पर आरोपी के खिलाफ धारा २२३(ए) बीएनएस के तहत कार्रवाई की।कार्बाइड गन एवं निर्माण सामग्री की जब्ती में क्राइम ब्रांच और कुंडम थाने के पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका रही। वहीं मदनमहल क्षेत्र में कार्रवाई में बस स्टैंड चौकी प्रभारी उप निरीक्षक जगन्नाथ यादव, प्रधान आरक्षक दीपक कुमार बकोड़े एवं आरक्षक लक्ष्मीनारायण का योगदान रहा।

यूपी के उरईसे नशीले इंजेक्शन मंगाकर भोपालमें करता था सप्लाई

५० फीसदी तक कमाते थे मुनाफा, भोपाल में इंजेक्शनो के साथ पकड़ाएं युवक ने किया चौकांने वाला खुलासा

भोपाल, (एजेंसी)। राजधानी भोपाल की निशातपुरा पुलिस द्वारा नशीले इंजेक्शनो की सप्लाई करने जा रहे आरोपी युवक की गिरफ्तारी के बाद की गई पूछताछ में चौकांने वाला खुलासा हुआ हैं। २९२ नशीले इंजेक्शनों के साथ पकड़ाएं आरोपी प्रेम शर्मा ने पुलिस को पूछताछ में इंजेक्शन बेचकर ५० प्रतिशत तक मुनाफा कमाने की बात बताई है। मामले की जांच कर रहे सत्येंद्र तोमर ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने नशे के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले दो तरह के २९२ इंजेक्शनों के साथ बुधवार रात आरोपी प्रेम शर्मा (२२), निवासी द्वारिका नगर, बजरिया को गिरफ्तार किया था। आरोपी ने खुलासा किया है कि उसके पास बरामद इंजेक्शन उसने छोला मंदिर इलाके से अपने साथी की मदद से १४,४०० रुपए में खरीदे थे, और २० हजार रुपए में किसी अन्य के साथ सौदा तय किया था। वह खरीदने वाले युवक को डिलीवरी देने के लिए भानपुर इलाके में जा रहा था, लेकिन डिलेवरी देने से पहले ही करोंद चौराहे के पास पुलिस ने उसे पकड़ लिया। आरोपी युवक का कहना है कि उसके साथ उसका साथी भी मौजूद था, लेकिन पुलिस को देखकर वह पहले ही कूदकर फरार हो गया था, और उसे डिवाइडर होने के कारण गाड़ी घुमाने का मौका नहीं मिला और पुलिस ने उसे पकड़ लिया। आरोपी ने बताया कि पिछले ६ महीने से वह अपने साथी की मदद से उत्तर प्रदेश के उरई से नशीले इंजेक्शन मंगा कर भोपाल में सप्लाई कर रहा था। करीब ५ बार उरई से इंजेक्शनों की खेप मंगा कर भोपाल में सप्लाई कर चुका था। पुलिस अब प्रेम शर्मा के फरार साथी और युवक को छोला मंदिर इलाके से इंजेक्शन देने वाले आरोपी की तलाश में जुटी हुई हैं। अब पुलिस यह पता लगा रही है कि इस कारोबार में उसके साथ कौन-कौन लोग जुड़े हैं और इंजेक्शन किसे बेचे जाते थे। गौरतलब है कि मुखबिर से मिली सूचना पर पुलिस ने जेल रोड स्थित सी साइट रेस्टोरेंट के पास से पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी युवक नशीले इंजेक्शनो की खेप के साथ पकड़ा था। तलाशी लेने पर उसके वाहन की डिक्की में नशीले इंजेक्शन मिले थे। गिरफ्तार आरोपी को दिन कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया गया। पीआर में पूछताछ के दौरान युवक से कई तरह के खुलासे हुए हैं, पुलिस उन खुलासों के आधार पर आगे की जांच कर रही है। आरोपी प्रेम शर्मा के पास से २-२ एमएल के कुल २९२ इंजेक्शन बरामद किए गए हैं। पूछताछ में आरोपी ने बताया की वह उत्तर प्रदेश से इंजेक्शन मंगवा कर भोपाल में कारोबार कर रहा था,वह एक बार में करीब १०० से १५० इंजेक्शन लाता था, और उन्हें ५० प्रतिशत तक मुनाफे पर बेचता था। पूछताछ में यह भी सामने आया कि दोनों तरह के इंजेक्शनों को मिलाकर नशेके लिए इस्तेमाल किया जाता था।

मरे हुए भाई के नाम पर सेना की नौकरी

मृत्यु के बाद मिलने वाले लाभ लेने के लिए फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र का सहारा

कटनी, (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के कटनी जिले के रीठी थाना क्षेत्र में सेना की नौकरी और पेंशन से जुड़े फर्जीवाड़े का मामला सामने आया है। आरोप है कि एक व्यक्ति ने अपने मृत भाई के शैक्षणिक दस्तावेजों और नाम का इस्तेमाल कर सेना में नौ